2 मई 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 3 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मई (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

जिनदर्शन तीर्थयात्रा सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान यात्रा संघ के तत्त्वावधान में दिनांक 12 से 14 अप्रैल तक राजस्थान प्रांतीय 'जिनदर्शन तीर्थयात्रा' का आयोजन किया गया।

यात्रा का शुभारम्भ अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों द्वारा हरी झण्डी दिखाकर किया गया। इस अवसर पर डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्री अखिलजी बंसल आदि महानुभाव भी उपस्थित थे।

तीर्थयात्रा का शुभारम्भ करते हुए डॉ. भारिल्ल

पूजन व भक्ति करते हुए यात्रीगण

यात्रा में सुदर्शनोदय तीर्थ आवां, स्वस्तिधाम जहाजपुर, चंवलेश्वर पार्श्वनाथ, बिजौलिया पार्श्वनाथ, केशवरायपाटन, मुमुक्षु आश्रम कोटा, चांदखेड़ी, बारां, इन्द्रगढ, चमत्कारजी आदि भव्य प्राचीन अतिशय क्षेत्रों पर विराजमान मनोहारी जिनबिम्बों के दर्शनकर सभी का हृदय प्रफुल्लित हो उठा।

तीर्थयात्रा के साथ ही महावीर पंचकल्याणक विधान, जिनेन्द्र भक्ति, अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन ने इस यात्रा को आनन्ददायी व अविस्मरणीय बना दिया। यात्रा के अन्त में पुरस्कार वितरण समारोह एवं आभार प्रदर्शन का आयोजन किया गया, जिसमें सभी यात्रियों ने अपने अनुभव सुनाये और भविष्य में इसी तरह यात्रा निकालने की भावना भायी।

महावीर जयन्ती सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में महावीर जयन्ती के अवसर पर दिनांक 17 अप्रैल को प्रातः ध्वजारोहण तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों द्वारा हुआ।

इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, बापूनगर समाज के मंत्री श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन, श्री अजितजी तोतुका आदि महानुभाव भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में टोडरमल महाविद्यालय के सभी छात्र व वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल के सभी सदस्य उपस्थित थे। इसके पश्चात् प्रभात फेरी निकाली गई, जिसके अन्तर्गत श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल बापूनगर एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में 'अर्हं पाठशाला' की झांकी सजाई गई, जिसे देखकर संपूर्ण जैनसमाज मंत्रमुग्ध हो गई। साथ ही बापूनगर सम्भाग द्वारा 'बेटी बचाओ' की झांकी सजाई गई।

जिनेन्द्र भक्ति एवं नृत्य-गान करते हुए रथयात्रा लालकोठी मन्दिर पहुँची, जहाँ ध्वजारोहण एवं कलशाभिषेक हुआ। इसके पश्चात् रथयात्रा पार्श्वनाथ चैत्यालय पहुँची, जहाँ ध्वजारोहण व कलशाभिषेक के पश्चात् आयाजित सभा में डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला। इसके पश्चात् रथयात्रा जयपुर शहर की मुख्य रथयात्रा में सम्मिलित हुई। महावीर जयंती के उपलक्ष्य में श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल, बापूनगर द्वारा टोडरमल स्मारक में दीक्षा कल्याणक पर नाटिका का आयोजन हुआ।

अर्हं पाठशाला की भव्य झांकी - महावीर जयन्ती के अवसर पर अर्हं पाठशाला की झांकी का आयोजन '**महावीर के संदेशों को घर-घर तक पहुंचायेंगे**' विषय पर हुआ। यह पाठशाला ऑनलाईन वीडियो ज़ूम एप द्वारा लाइव चलाई जाती है, जिसका लाभ आप कहीं भी किसी भी भाषा में ले सकते हैं। यह झांकी पण्डित पीयूषजी शास्त्री व पण्डित संजयजी शास्त्री (सर्वोदय अहिंसा) के निर्देशन में एवं रूपेन्द्रजी शास्त्री, आकाशजी शास्त्री के संयोजन में संपन्न हुई। झांकी में आध्यात्मिक भजनों की प्रस्तुति अर्पितजी शास्त्री, जिनेन्द्रजी शास्त्री, रिमांशुजी शास्त्री, अनेकान्तजी शास्त्री, समकितजी शास्त्री द्वारा दी गई।

सम्पादकीय -

ऐसे क्या पाप किये?

28

- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

निश्चय में अनारूढ़, व्यवहार में विमूढ़ जगत के प्रति उनके हृदय में अपार करुणा थी। उनके चित्त में तत्त्व प्रतिपादन के अनन्त विकल्प उमड़ते, उन विकल्पों के वशीभूत हो उनकी लेखनी चल पड़ती, वाणी फूटी पड़ती, परन्तु विवेक निरन्तर जागृत रहता। वाणी और लेखनी से प्रसूत परमागम में कर्तृत्वबुद्धि नहीं रहती, अपितु ''मैं इनका कर्ता नहीं हूँ'' ऐसा ही भाव निरन्तर जागृत रहता है। यही कारण है कि लगभग प्रत्येक कृति के अन्त में उनसे यही लिखा गया ''मैं इस कृति का कर्ता नहीं हूँ। मैं तो मात्र ज्ञाता-दृष्टा आत्माराम हूँ।'' प्रस्तुत कृति पुरुषार्थसिद्ध्युपाय के अन्तिम छन्द में भी यही भाव व्यक्त हुआ है, जो इसप्रकार है -

वर्णैः कृतानि चित्रैःपदानि तु पदैः कृतानि वाक्यानि।
वाक्यैः कृतं पवित्रं शास्त्रमिदं न पुनरस्माभिः।।

अनेकप्रकार के अक्षरों से रचे गये पद, पदों से बनाये गये वाक्य हैं और उन वाक्यों से फिर यह पवित्र शास्त्र बनाया गया है, हमारे द्वारा कुछ भी नहीं किया गया है।''

आचार्य अमृतचन्द्र द्वारा रचित सात ग्रन्थ उपलब्ध हैं -

१. आत्मख्याति (समयसार टीका) २. तत्त्वप्रदीपिका (प्रवचनसार टीका) ३. समय व्याख्या (पंचास्तिकाय टीका) ४. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (मौलिक ग्रन्थ) ५. परमाध्यात्म तरंगिणी (समयसार कलश) ६. लघु तत्त्वस्फोट (मौलिक ग्रन्थ) ७. तत्त्वार्थसार (तत्वार्थ सूत्र की पद्यमय प्रस्तुति)।

यहाँ श्रावकाचार के संदर्भ में पुरुषार्थसिद्ध्युपाय की चर्चा प्रासंगिक है अतः उसका संक्षिप्त परिचय इसप्रकार है :-

प्रस्तुत पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ग्रन्थ आचार्य अमृतचन्द्र की सर्वाधिक पढ़ी जानेवाली मौलिक रचना है। आजतक के सम्पूर्ण श्रावकाचारों में इसका स्थान सर्वोपरि है। इसकी विषयवस्तु और प्रतिपादन शैली तो अनूठी है ही, भाषा एवं काव्य सौष्ठव भी साहित्य की कसौटी पर खरा उतरता है। अन्य किसी भी श्रावकाचार में निश्चय-व्यवहार, निमित्त-उपादान एवं हिंसा-अहिंसा का ऐसा विवेचन और अध्यात्म का ऐसा पुट देखने में नहीं आया। प्रायः सभी विषयों के प्रतिपादन में ग्रन्थकार ने अपने आध्यात्मिक चिन्तन एवं भाषा-शैली की स्पष्ट छाप छोड़ी है।

वे अपने प्रतिपाद्य विषय को निश्चय-व्यवहार की संधिपूर्वक स्पष्ट करते हैं। उक्त संदर्भ में प्रभावना अंग संबंधी निम्नांकित छन्द दृष्टव्य है -

''आत्मा प्रभावनीयो रत्नत्रय तेजसा सततमेव।
दान तपो जिनपूजा विद्यातिशयैश्च जिनधर्मः।।३०।।

रत्नत्रय के तेज से निरन्तर अपनी आत्मा को प्रभावित करना, निश्चय प्रभावना है तथा दान, तप, जिनपूजा और विशेष विद्या द्वारा जिनधर्म की प्रभावना का कार्य करना व्यवहार प्रभावना है।''

एक प्रकार से यह पूरा ग्रन्थ ही निश्चय-व्यवहार के समन्वय की सुगंध से महक उठा है।

नयविभाग की यथार्थ जानकारी के बिना आज निश्चय-व्यवहार के नाम पर समाज में जो विग्रह चल रहा है, उसके शमन का एकमात्र उपाय इस ग्रन्थ का अधिक से अधिक पठन-पाठन करना ही है।

आचार्य अमृतचन्द्र जिनागम के अध्ययन के लिए निश्चय-व्यवहार का ज्ञान आवश्यक मानते हैं। उनका कहना है कि निश्चय-व्यवहार के ज्ञान बिना शिष्य जिनागम का रहस्य नहीं समझ सकता, तथा जिनागम के अभ्यास का अविकल फल भी प्राप्त नहीं कर सकेगा। वे कहते हैं -

''व्यवहारनिश्चयौ यः प्रबुध्य तत्त्वेन भवति मध्यस्थः।
प्राप्नोति देशनायाः स एव फलमविकलं शिष्यः।।८।।[१]

जो जीव व्यवहारनय और निश्चयनय को वस्तुस्वरूप से यथार्थ जानकर मध्यस्थ होता है, वह ही उपदेश का अविकल फल प्राप्त करता है।''

मोक्षमार्ग में निश्चय-व्यवहार का स्थान निर्धारित करनेवाली गाथा प्रस्तुत करके टीकाकार पण्डित टोडरमलजी कहते हैं कि ''हमें पहले दोनों नयों को भले प्रकार जानना चाहिए, पश्चात् उन्हें यथायोग्य अंगीकार करना चाहिए। किसी एक नय के पक्षपाती होकर हठग्राही नहीं होना चाहिए। वे कहते हैं -

''जइ जिणमयं पवज्जह ता मा व्यवहार णिच्छएमुयह।
एक्केण विणा छिज्जइ तित्थं अण्णेणउण तच्चं।।१९।।[२]

१. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय छन्द - ८

२. अनगार धर्मामृतः पंडित आशाधरजी प्रथम अध्याय, पृष्ट - १९

यदि तू जिनमत में प्रवर्तन करना चाहता है तो व्यवहार और निश्चय को मत छोड़। यदि निश्चय का पक्षपाती होकर व्यवहार को छोड़ेगा तो रत्नत्रय स्वरूप धर्मतीर्थ का अभाव होगा और यदि व्यवहार का पक्षपाती होकर निश्चय को छोड़ेगा तो शुद्धतत्त्व का अनुभव नहीं होगा।''

यह गाथा आचार्य अमृतचन्द्र को भी अत्यन्त प्रिय थी। उन्होंने आत्मख्याति में इसे उद्धृत किया है। वे अपनी टीकाओं में सहजरूप से कोई उद्धरण देते ही नहीं हैं, तथापि इस गाथा को उन्होंने उद्घृत किया है।

मोक्षमार्ग का आरम्भ करते हुए एवं सम्यग्दर्शन की प्राप्ति की प्रेरणा देते हुए पुरुषार्थसिद्ध्युपाय में आचार्य कहते हैं -

''तत्रादौ सम्यक्त्वं समुपाश्रयणीयमखिल यत्नेन।
तस्मिन् सत्येव यतो भवति ज्ञानं चरित्रं च।।२१।।[१]

इन तीनों में सर्वप्रथम सम्पूर्ण प्रयत्नों से सम्यग्दर्शन की उपासना करना चाहिये, क्योंकि उसके होने पर ही ज्ञान और चारित्र सम्यक् होते हैं।''

उन्होंने सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की परिभाषायें निश्चय-व्यवहार की संधि पूर्वक ही दी है, जो इस प्रकार हैं -

''जीवादि पदार्थों का विपरीत अभिनिवेश रहित श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन है और वह निश्चय से आत्मरूप ही है।

जीवादि पदार्थों का संशय-विपर्यय-अनध्यवसाय रहित यथार्थ निर्णय सम्यग्ज्ञान है और वह सम्यग्ज्ञान निश्चय से आत्मरूप ही है।

समस्त सावद्ययोग और सम्पूर्ण कषायों से रहित पर पदार्थों से विरक्तरूप आत्मा की निर्मलता सम्यक्चारित्र है और वह सम्यक्चारित्र निश्चय से आत्मस्वरूप ही है।''

चारित्र के प्रकरण में आचार्य अमृतचन्द्र ने हिंसा-अहिंसा का जैसा मौलिक चिन्तन प्रस्तुत किया है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिलता।

हिंसा-अहिंसा की परिभाषा दर्शाते हुए प्रस्तुत ग्रन्थ में ही आचार्य लिखते हैं-

''अप्रादुर्भाव खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति।
तेषामेवोत्पत्तिहिंसेति जिनागमस्य संक्षेपः।।४४।।''
यत् खलु कषाय योगात् प्राणानां द्रव्यभावरूपाणम्।
व्यपरोपणस्य करणं सुनिश्चिता भवति सा हिंसा।।४३।।[२]

१. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय छन्द - २१ २. वही, छन्द - ४४, ४३

निश्चय से आत्मा में रागादि भावों का प्रगट न होना ही अहिंसा है, और उन रागादि भावों का उत्पन्न होना ही निश्चय से हिंसा है।

कषाय रूप परिणमित हुए मन, वचन, काय के योग से स्व-पर के द्रव्य व भाव दोनों प्रकार के प्राणों का व्यपरोपण करना-घात करना ही हिंसा है।''

जिनागम में हिंसा-अहिंसा की व्याख्या अत्यन्त सूक्ष्म रूप में की गई है। सर्वत्र भावों की मुख्यता से ही हिंसा के विविध रूपों का वर्णन है।

पाँचों पापों को एवं कषायादि को हिंसा में ही सम्मिलित करते हुए आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं -

''आत्मपरिणामहिंसन् हेतुत्वात् सर्वमेवहिंसैतत्।
अमृतवचनादि केवलमुदाहृंत शिष्यवोधाय।।''[१]

आत्मा के शुद्धोपयोग रूप परिणामों के घातक होने से ये सब पाँचों पाप एवं कषायादि सब हिंसा ही है, असत्य वचनादि के भेद तो केवल शिष्य को समझाने के लिए कहे हैं।

(क्रमशः)

१. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय छन्द - ४२

स्वाध्याय हॉल का उद्घाटन हुआ

सांगली (महा.) : यहाँ दक्षिण प्रांत शास्त्री स्नातक परिषद् द्वारा दिनांक 14 अप्रैल, 2019 को वीतराग विज्ञान स्वाध्याय हॉल का उद्घाटन हुआ।

हॉल के उद्घाटनकर्ता न्यायमूर्ति भालचंद्रजी वग्यानी थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुरेशजी पाटील (भूतपूर्व मेयर-सांगली एवं श्रवणबेलगोला कमेटी के अध्यक्ष) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री बी.टी.बेडगे (संचालक-बाहुबली आश्रम, बाहुबली), डॉ. किरणभाई शहा पुणे, श्री उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई (ट्रस्टी-देवलाली ट्रस्ट), श्री सनत्कुमारजी आरवाडे सांगली, श्री शांतिनाथजी कल्पवृक्ष जयसिंहपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर शांति विधान का आयोजन, रथयात्रा का आयोजन, मराठी पद्यानुवाद सहित द्रव्यसंग्रह का विमोचन (पण्डित प्रकाशजी देशमाने, सांगली द्वारा संपादित), प्रोजेक्टर स्क्रीन का उद्घाटन एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग 500 साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया।

विधि-विधान के कार्य पण्डित प्रफुल्लजी शास्त्री द्वारा पण्डित रोहितजी सिद्धनाले शास्त्री जयसिंहपुर के सहयोग से संपन्न हुये।

- महावीर पाटील, सांगली

पोन्नूरमलै में शिविर संपन्न

पोन्नूरमलै (तमिलनाडु) : चेन्नई से 120 कि.मी. दूर आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूरमलै में दिनांक 27 से 31 मार्च तक जिनदेशना आध्यात्मिक शिक्षण शिविर रत्नत्रय विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित चेतनभाई राजकोट, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित अशोकजी वैभव छिन्दवाड़ा, पण्डित विमलकुमारजी छिन्दवाड़ा द्वारा प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

वेदी शिलान्यास संपन्न

दुबई : यहाँ अजमान में निर्मित जिन चैत्यालय में अरिहंत मित्र मंडल दुबई और श्री आलोकजी गोयल के अथक प्रयासों से दिनांक 26 अप्रैल को वेदी शिलान्यास महोत्सव आयोजित किया गया।

आगामी दिनांक 3 मई को होने वाले वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव में मूलनायक नेमिनाथ भगवान, आदिनाथ भगवान, शांतिनाथ भगवान, पार्श्वनाथ भगवान एवं महावीर भगवान की प्रतिमाएं स्थापित की जायेंगी।

– डॉ. नीतेश शास्त्री, दुबई

शोक समाचार

(1) फिरोजाबाद (उ.प्र.) निवासी श्री अरुणकुमार जैन (पोद्दार) का दिनांक 16 अप्रैल को 68 वर्ष की आयु में दुर्घटनावश आकस्मिक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, शिक्षण शिविरों व पंचकल्याणकों में जाकर लाभ लिया करते थे। देहावसान के पूर्व भी जिनदर्शन तीर्थयात्रा की थी। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक नवीनजी शास्त्री (पोद्दार) जयपुर के पिताजी थे।

(2) जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती सूरजदेवी सेठी धर्मपत्नी स्व. श्री जमनालालजी सेठी का दिनांक 24 अप्रैल को 92 वर्ष की आयु में तत्त्वचर्चा करते हुए शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री कैलाशचंदजी, प्रकाशचंदजी सेठी की माताजी एवं टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक संजयजी सेठी जयपुर की दादीजी थीं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 11000/– रुपये प्राप्त हुये।

(3) शिकोहाबाद (उ.प्र.) निवासी श्रीमती मधुर जैन धर्मपत्नी स्व. जयकुमारजी जैन एडवोकेट का दिनांक 25 अप्रैल को 65 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में आपके सुपुत्र श्री मनोजजी, विनीतजी एवं रजनीशजी की ओर से जैनपथप्रदर्शक हेतु 501/– रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

चलो सूरत! चलो सूरत!! चलो सूरत!!!

श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 19 मई से बुधवार, 5 जून 2019

के अवसर पर

विगत 41 वर्षों से कार्यरत जैन समाज का अग्रणीय संस्थान

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में

प्रवेश पाने का स्वर्णिम अवसर

योग्यता : किसी भी बोर्ड से दसवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण।

विशेषताएं

- डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल और पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सानिध्य में रहकर 5 वर्षों तक जैनदर्शन का तलस्पर्शी मर्म समझने का स्वर्णिम अवसर।
- मात्र 5 वर्ष में जैनधर्म के आधिकारिक विद्वान बनें।
- स्वयं स्वाध्याय कर आत्मकल्याण करें, समाज को आत्म–कल्याणकारी धर्म के मार्ग पर लगायें।
- सरकारी मान्यता प्राप्त स्नातक डिग्री (''शास्त्री'' BA के समकक्ष)।
- आगे उच्च (सर्वोच्च) शिक्षा प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध।
- शिक्षण के क्षेत्र में सुनहरे अवसर।
- सम्पूर्ण 5 वर्ष तक आवास एवं भोजन नि:शुल्क।
- अब तक लगभग 800 स्नातक, सभी उच्च पदस्थ।
- विशाल शिक्षण संस्थानों के संचालन में रत।
- विश्वविद्यालय, कॉलेज और स्कूलों में प्रोफेसर, लेक्चरर और शिक्षक पदों पर कार्यरत।

सिद्धचक्र महामंडल विधान संपन्न

टीकमगढ (म.प्र.) : यहाँ श्री 1008 सीमंधर जिनालय ज्ञानमंदिर की 15वीं वर्षगांठ के अवसर पर दिनांक 13 से 20 मार्च तक अष्टाह्निका पर्व में श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन स्व. श्रीमती पुष्पादेवी ठगन की भावनानुसार श्री सनतकुमारजी ठगन परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर टोडरमल महाविद्यालय के उपप्राचार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा ग्रंथाधिराज समयसार एवं विधान की जयमाला पर प्रवचनों का लाभ मिला एवं विदुषी प्रतीति पाटील द्वारा कक्षाएं ली गईं।

कार्यक्रम में **'चलो सिद्धों की छांव तले'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ.शांतिकुमारजी पाटील ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुरेशचंदजी टीकमगढ रहे। इसमें स्थानीय विद्वानों ने भी अपने वक्तव्य दिये। कार्यक्रम का संचालन पण्डित मयंकजी शास्त्री ठगन टीकमगढ ने किया

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित मधुवनजी मुजफ्फरनगर एवं पण्डित सम्मेदजी सिद्धार्थी टीकमगढ द्वारा संपन्न हुये।

आचार विचार संस्कार

ARHAM PATHSHAALA

महावीर के संदेशों को घर–घर तक पहुँचायेगें

अर्हं पाठशाला

पण्डित टोडरमल मुक्त विद्यापीठ जयपुर द्वारा संचालित

अब ऑनलाईन
जैन पाठशाला
घर–घर तक
जन-जन तक

5 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लिये

प्रवेश प्रारम्भ

त्रैमासिक पाठ्यक्रम

रजिस्टर करें

सीमित स्थान

आप सीखेंगे

- जैनधर्म के मूलभूत सिद्धांतों को
- जैन सिद्धांतों का प्रायोगिक ज्ञान
- जीवन जीने की कला
- महापुरूषों का जीवन चरित्र
- नैतिकता
- सदाचरण
- चरित्र–निर्माण
- तनाव मुक्त जीवन

मुख्य आकर्षण

- ★ विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा कक्षाऐं
- ★ पॉवर पाईण्ट प्रजेन्टेशन
- ★ जूम एप द्वारा ऑनलाईन लाइव वीडियो कक्षाऐं
- ★ 6 भाषाओं में कक्षाऐं (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, कन्नड, तमिल)
- ★ विश्व भर में कक्षाओं का संचालन
- ★ समस्या समाधान सत्र
- ★ प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक सभी जैन पाठ्यकम उपलब्ध

प्रवेश शुल्क **300/-** मात्र

फॉर्म हेतु सम्पर्क करें :– 8058890377

DIRECTOR → एस. पी. भारिल्ल, विश्व प्रसिद्ध वक्ता
DIRECTOR → डॉ. संजीव गोधा, अन्तरराष्ट्रीय जैन विद्वान
CO-DIRECTOR → पीयूष शास्त्री, प्रसिद्ध जैन विद्वान

Chief Executive	Co-ordinator	In-charge	Executive
प्रतीति पाटील	आकाश शास्त्री 8770845953	जिनेन्द्र शास्त्री 9571955276	अर्पित शास्त्री 6350509218

E-learning of Mokshmarg

पद्यात्मक विचार बिन्दु

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

प्रस्तुत पदों में हमारे विचारों, आचरण और व्यवहार में पायी जाने वाली विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए कुछ ऐसे विचार बिन्दु प्रस्तुत किये गये हैं, जिन पर यदि गंभीरतापूर्वक गहराई से विचार किया जाये तो न सिर्फ हमारी विचारधारा में आमूलचूल परिवर्तन होगा वरन् निश्चित ही हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। विचारशील पाठकों से अपेक्षा है कि इसका लाभ अवश्य लेंगे। अगले कुछ अंकों तक यह क्रम जारी रहेगा।

क्या न तूने अघ किये, इस देह पोषण के लिये,
देह से ही मैं रहूं, मम नाश हो इसके मरे।
रे जड़ बने तू जड़ बने, जड़ता से करता प्यार है,
पहिचान ले तू रूप अपना, आतमा अविकार है।।७३।।
देह की संतती को ही, कहे तेरी परम्परा,
और उनके रागवश, दिन रात अघ कर कर मरा।
ना देह ना सन्तति तेरी, प्रत्यक्ष दिखता लोक में,
रे मूढ तब क्यों तू भ्रमें, निज मानकर संसार में।।७४।।
निज आतमा बस एक है, पर है गुणों की खान वो,
जान लो निज गुणों को, परिणमन को पहिचान लो।
द्रव्य गुण पर्याय से जो, जानता निज आत्म को,
भेद से निरपेक्ष देखे, आत्म वही परमात्म वो।।७५।।
कहता अनादि अनन्त हूँ, पर क्षणिक ही बस मानता,
तब देह में क्यों मगनता, यदि आतमा पहिचानता।
इस देह के शृंगार में तू, रात-दिन ही रत रहे,
पर आत्म के चिंतवन को तू, व्यर्थ की वस्तु कहे।।७६।।
तू मानता तेरे हैं परिजन, रहें तव आधार से,
पलता रहे अहसास ये, जब तक पुकारें प्यार से।
भ्रम टूट जाता एक दिन, यह व्यथा हर घर द्वार है,
भ्रममयी जीवन अरे क्या, सचमुच तुझे स्वीकार है।।७७।।
मैं मनुज राजा नर अमर, अर वृद्ध बालक मैं अरे,
यह मानकर चैतन्य राजा, स्वयं जड़ता को वरे।
चैतन्य जड़ को मिलाना, जड़ता भरा व्यवहार है,
इस मान्यता का फल अरे, यह दुःखमयी संसार है।।७८।।

आतम स्वयं परमात्म है, पर द्रव्य सब पर आतमा,
हैं स्वयं के परमात्म वे, पर द्रव्य को पर आतमा।
प्रयोजनभूत है जानना, जीवाजीव तत्त्व विचार ये,
सभी ज्ञानी एक मत से, सत्य को स्वीकारते।। ७९।।
मैं पाप से डरता रहा, अरु पुण्य पर मरता रहा,
इन आस्रवों के खेल में मैं, कर्मघट भरता रहा।
शुभ अशुभ विरहित शुद्धता ही, मुक्ति का इक द्वार है,
शुभ अशुभ दोनों कर्म हैं, वा कर्म सब संसार है।।८०।।
पुण्य हो या पाप हो, भव में भ्रमाते जीव को,
हित अहित के अभिप्राय से, वे एक हैं दोनों अहो।
अशुभ शुभ में भेद करना, संसार का अधिकार है,
मोक्ष से ना जीव को, संसार से ही प्यार है।। ८१।।
रचता रहे यह जीव नित, द्वेषमय परिणाम में,
पर मानते सुख शांति ये सब, रागमय परिणाम में।
हैं पापमय संसारमय, दोनों ही बंध विचार हैं,
मुक्ति पथिक को एक से हैं, भेद ना स्वीकार है।।८२।।
मान हितकारक किये, अनुबंध मैंने नित यहाँ,
अनुबंध तो बस बंध हैं, निर्बंध का यह पथ कहाँ।
निर्बन्धता हितकार है, बंधन सदा दुःखकार है,
यह जानकर भी क्यों तुम्हें, बस बन्धनों से प्यार है।।८३।।
परद्रव्य से संबंध यह तो, बंध है बस बंध है,
संबंध विरहित जीव तो, त्रिकाल ही निर्बन्ध है।
बंधता नहीं यह आतमा, बंधन है मिथ्या मान्यता,
बंधन में निज को मानकर, यह जीव बंधन में बंधा।। ८४।। (क्रमशः)

प्रशिक्षण शिविर गीत

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आओ प्रशिक्षण प्राप्त करें हम वीतराग विज्ञान का,
अभिशाप मिटायें और जगत से पामरता अज्ञान का।
सर्वोत्कृष्ट है अनुपम यह कारक सबके कल्याण का,
इस पथ पर चल पड़ने वाला अधिकारी ध्रुवधाम का।।1।।

अनादिकाल से हुए आज तक तीर्थंकर भगवान का,
वीर कुन्द वा टोडरमल गुरुदेव कहान महान का।
एकमात्र यही आह्वानन यह लक्ष्य है इस अभियान का,
एक यही उपदेश जगत को निज आतम कल्याण का।।2।।

सात तत्त्व छह द्रव्य को जानो आत्मतत्त्व को पहिचानो,
है कौन जीव अजीव कौन है इनके अंतर को जानो।
पाप कषाय को जान त्यागकर धर्म मार्ग को अपनाओ,
भक्त ही कब तक बने रहोगे अब तुम भगवन बन जाओ।।3।।

जिनआगम के नय-अनुयोगों का परिचय तुम प्राप्त करो,
अनेकान्तमय वस्तु-व्यवस्था को समझो न विवाद करो।
नवकार मंत्र में नमन किया उन पंचपरमपद को जानो,
अनुक्रम से उस पथ पर चलकर भगवन बनने की ठानो।।4।।

लक्ष्य यही प्रशिक्षण का है खुद समझो समझाओ सबको,
स्वयं मुक्ति का वरण करो वा मोक्षमहल ले जाओ सबको।
उपकृत हो तुम स्वयं तो क्यों ना अन्यों पर उपकार करो,
तीर्थंकर गणधरदेवों ने कार्य किया वह कार्य करो। ।5।।

ना बदलकर भी बदलना....

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

प्रस्तुत पद डॉ.भारिल्ल के उस समय के चिंतन के फलस्वरूप लिखे गये हैं, जब वे अत्यंत बीमारी की हालत में थे। प्रस्तुत पदों में स्वयं आत्मा को अन्य सभी परद्रव्यों और पर–आत्माओं से भिन्न बताया गया है। अन्य द्रव्य से भेदविज्ञान की अपेक्षा अन्य जीवात्माओं से भेदविज्ञान पर अधिक बल दिया है। आत्मकल्याण के इच्छुक जीवों को स्व–पर भेदविज्ञान ही करने योग्य है, जिसमें यह रचना लाभप्रद सिद्ध होगी। वैराग्य प्रवृत्ति वाले मुमुक्षु भाईयों के लाभार्थ इसे यहाँ दिया जा रहा है –

(हरिगीत)

रे असंयोगीतत्त्व में संयोग कुछ करते नहीं।
संयोग भी तो सुनिश्चित हैं कहा जिनवरदेव ने।।
अपने सुनिश्चित योग में वे भी निरन्तर बदलते।
नित निरन्तर ही बदलना उनका सहज परिणाम है।। १।।

यद्यपि वे नित्य बदलें निरन्तर बदला करें।
सुनिश्चित परिणमन उनका स्वयं का सर्वस्व है।।
तेरे किये कुछ नहीं होता उनके सहज परिणमन में।
उनके सहज परिणमन में और गमनागमन में।। २।।

द्रव्य से द्रव्यान्तर ना पलटना है जिसतरह।
नित बदलना भी उसतरह उनकी सहज सम्पत्ति है।।
ना बदल कर भी बदलना होता निरन्तर नित्य ही।
बदलकर भी ना बदलना भी सहज परिणाम है।। ३।।

बदलकर भी ना बदलना बिना बदले बदलना।
रे बदलना ना बदलना यह वस्तु का परिणमन है।।
अपेक्षा को समझना ही एकमात्र उपाय है।
नहीं समझी अपेक्षा तो उलझना ही नियति है।। ४।।

यदि चाहते हो सुलझना तो अपेक्षा पर ध्यान दो।
अपेक्षा समझे बिना तुम पार पा सकते नहीं।।
स्याद्वादी जैनियों की स्याद्वादी पद्धति।
को समझना ही समझ लो बस एकमात्र उपाय है।। ५।।

ना बदलकर बदला करे या नहीं बदले बदलकर।
बदले न बदले जो भी हो हमको बतायें क्या करें।।
पर जो भी बदलाबदल हो उसमें हमारा भी चले।
बस बात इतनी ही है इससे अधिक हम क्या कहें?।।६।।

इस जगत का सब परिणमन इकदम सुनिश्चित जानिये।
बदलने की भावना इकदम असंभव मानिये।।
ऐसी असंभव भावना मिथ्यात्व है अज्ञान है।
जिनदेव का ऐसा कथन यह सभी मिथ्याज्ञान है।।७।।

इक द्रव्य का अन्य द्रव्य में चलता नहीं कुछ रंच भी।
यह कथन है जिनदेव का इसमें न अन्तर रंच भी।।
यह अटल सिद्धांत है इसमें किसी का क्या चले?
है ठीक इस सिद्धांत के अनुकूल अपना मन बने।।८।।

वस्तु के परिणमन में थोड़ा हमारा भी चले।
यह भावना अज्ञान है अज्ञान से हम सब बचें।।
इस भावना की पूर्ति तो तेरी कभी होगी नहीं।
त्याग ऐसी भावना सन्मार्ग पर हम सब चलें।।९।।

पर्याय का परिणमन आया सहज केवलज्ञान में।
स्वीकारना ही धर्म है यह बात रखिये ध्यान में।।
यदी हो स्वीकार तो बस पार बेड़ा जानिये।
अतः अन्तर्भाव से स्वीकार होना चाहिये।।१०।।

(दोहा)

परम सत्य की स्वीकृति अन्तर्मन से होय।
तो इस आतमराम को रे अनंतसुख होय।।११।।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

1 से 5 मई	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
19 मई से 5 जून	सूरत	प्रशिक्षण शिविर,
7 जून से 6 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
2 से 11 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं
निजात्मकल्याण आध्यात्मिक शिविर समिति, सूरत द्वारा आयोजित

53वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 19 मई 2019 से बुधवार, 5 जून 2019 तक

विशेष आकर्षण

इस शिविर में मुख्यरूप से पाठशालाओं में अध्यापन कराने वाले अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा, जिससे वे अपने नगरों में बालकों को वैज्ञानिक पद्धति से पढा सकेंगे।

साथ ही –

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचनों का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक विद्वानों के प्रवचन, कक्षाओं का भरपूर लाभ।
- पाठशाला के अध्यापकों को अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।
- बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

कार्यक्रम स्थल :- दयालजी आश्रम, मजूरा गेट, सूरत (गुज.)

संपर्क सूत्र -

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458;

Email - ptstjaipur@yahoo.com

आवास प्रमुख – धर्मेन्द्र शास्त्री (9724038436), अरुण शास्त्री (9377451008), सम्यक् जैन (9033325581)

असुविधा से बचने के लिये आवास फार्म भरकर हमें सूचित करें। आवास सुनिश्चित करने की अन्तिम तिथि 30 अप्रैल है। वाट्सएप से भी आवास सुनिश्चित करवा सकते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

ऑस्ट्रेलिया में धर्म प्रभावना

सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) : यहाँ सिडनी जैन मण्डल एज्युकेशन सेन्टर के तत्त्वावधान में **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** द्वारा दिनांक 18 से 25 अप्रैल तक अपूर्व ज्ञानगंगा प्रवाहित हुई।

इसी बीच एक 4 दिवसीय आवासीय शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें घर-परिवार, व्यापार आदि की चिन्ताओं और विकल्पों से मुक्त होकर सभी ने अध्यात्म रस का पान किया। प्रतिदिन भोजन के समय को छोड़कर प्रात: से रात्रि तक लगभग 6-7 घण्टे संजीवकुमारजी गोधा के इष्टोपदेश ग्रंथ पर आद्योपांत मार्मिक प्रवचन एवं शंका-समाधान तथा भक्ति संध्या आदि कार्यक्रम आयोजित हुये। समस्त कार्यक्रमों का संचालन डॉ. मनीषजी जैन ने किया। साथ ही मण्डल अध्यक्ष श्री पंकजजी जैन के सान्निध्य में उनकी संपूर्ण टीम का सक्रिय सहयोग रहा।

शिविर के अतिरिक्त भी श्रावक के अष्ट-मूलगुण, षट् आवश्यक व तीन लोक विषय पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) स्थित दिगम्बर जैन मन्दिर

प्रकाशन तिथि : 28 अप्रैल 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com